भजन

तर्ज–वो दिल कहाँ से लाऊँ

माशूक रुह ये चाहे गुण तेरे मैं गाऊं
गुण बढ़ते जाते पल पल गुण कैसे तेरे गाऊं

1–इक कंकरी अर्श की चौदह तबक उड़ावे
हक हादी और रूहें नासूत में है आये
मेहर के है वो सागर मेहर मैं क्या बताऊं
2–मेहर का खेल दिखाया चरणों तले बिठा के
नासूत में दिये है सुख अर्श के वो सारे
अनहोनी हक की देखो इस मुख से क्या बताऊं
3–इक तुम्ही तुम हो प्रीतम बिन तेरे कुछ नही है
श्यामा जी में तुम्ही हो रुहों के दिल मे तुम्ही
है इश्क हक का कितना ये कैसे मैं बताऊं
4–मालिक जो दो जहां के रूहों के है वो आशिक
इन रूहों की सिफत खुद करते है अपने मुख हक
मेरी जुबां फना की गुण कैसे तेरे गाऊं